RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2015-17

ओ३म्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 36 एक प्रति 2 : रुपये

रविवार 18 नवम्बर, 2018

विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119

दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये

आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726

E-mail: apspunjab2010@gmail.com,

www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 36, 15-18 नवम्बर 2018 तदनुसार 3 मार्गशीर्ष, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में होगा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा ने लिया सर्वसम्मति से निर्णय

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक 11 नवम्बर, 2018 में सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी, सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी एवं आर्य विद्या परिषद पंजाब के रजिस्ट्रार श्री अशोक परूथी जी एडवोकेट को सम्मानित करते हुये सभा के उप प्रधान श्री सरदारी लाल जी जबकि चित्र दो और तीन में मीटिंग में भाग लेते हुये पदाधिकारी एवं अन्तरंग सदस्य।

सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में हुई बैठक

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की बैठक दिनांक 11 नवम्बर, 2018 को सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी की अध्यक्षता में सभा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर में हुई। इस बैठक में सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि आगामी प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन 3 फरवरी 2019 को बरनाला में किया जाएगा। सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी ने कहा कि गांवों में आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार नहीं हो रहा है इसलिये आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सबसे पहले पंजाब के गांवों में आर्य समाज का प्रचार एवं प्रसार बढ़ाएगी। उन्होंने कहा कि बरनाला में प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन होने से उसके आसपास के गांवों में आर्य समाज का प्रचार बढ़ेगा। इससे पहले आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा 19 फरवरी 2017 को लुधियाना में तथा 5 नवम्बर 2017 को नवांशहर में प्रान्तीय महासम्मेलन का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया है। महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सदैव कृतसंकल्प है। वेद प्रचार का यह अभियान पूरे पंजाब में चलाया जायेगा। सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी ने कहा कि आर्य समाज के अधीन चल रही शिक्षा संस्थाओं में हिन्दी एवं संस्कृत को बढ़ावा देने का प्रयास किया जायेगा। आज विदेशों में संस्कृत भाषा को महत्त्व दिया जा रहा है। भारत के प्रधानमन्त्री जब विदेश यात्रा पर जाते हैं तो वहां के बच्चे मन्त्रोच्चारण से उनका स्वागत करते हैं। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 में दक्षिण अफ्रीकी मूल की छात्राओं के द्वारा यज्ञ और मन्त्रोच्चारण किया गया, यह हमारे लिए गौरव की बात है। अमेरिका में हिन्दी दूसरी सर्वाधिक पसन्द की जाने वाली भाषा है। अगर विदेशों में हमारी भाषा को इतना सम्मान मिल सकता है तो इस पर हम भारतीयों को भी गम्भीरता से विचार करना चाहिए। इसलिए हमें अपनी शिक्षण संस्थाओं में विशेष रूप से इन दोनों विषयों को अनिवार्य करना होगा। उन्होंने कहा कि पिछले दिनों नई दिल्ली में हुये अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को विशेष सम्मान प्राप्त होने पर सभी सदस्यों ने सभा प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा एवं सभा महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी को बधाई दी। इस बैठक में श्री सरदारी लाल उप प्रधान, श्री चौधरी ऋषिपाल सिंह जी एडवोकेट उप प्रधान जालन्धर, श्रीमती राजेश शर्मा जी उपप्रधाना लुधियाना, श्री देवेन्द्र शर्मा जी उप प्रधान जालन्धर, श्री मुनीष सहगल जी एडवोकेट उपप्रधान, श्री प्रेम भारद्वाज जी महामंत्री नवांशहर, श्री अशोक पुरूथी जी एडवोकेट रजिस्ट्रार, श्री सुधीर शर्मा जी कोषाध्यक्ष जालन्धर, श्री ऋषिराज शर्मा जालन्धर, श्री भारत भूषण जी मेनन बरनाला, श्री विजय सरीन लुधियाना, श्री सोहन लाल सेठ जालन्धर, श्री रणवीर शर्मा जी लुधियाना, श्री पुरूषोत्तम शर्मा अमृतसर, श्रीमती विनोद गांधी जी लुधियाना, श्री वीरेन्द्र कौशिक जी पटियाला, श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल नवांशहर, श्री विनोद भारद्वाज जी नवांशहर, श्री राज कुमार जी जालन्धर, श्री वेद आर्य जी जालन्धर, श्री सुदेश कुमार जी जालन्धर, श्री मनोहर लाल जी लुधियाना, श्री योगेश सूद जी मोरिण्डा, श्री राजिन्द्र कौड़ा जी रायकोट, श्री सूर्यकांत जी शोरी बरनाला, श्री सत्य प्रकाश उप्पल मोगा, श्री सतीश कुमार शर्मा फरीदकोट, श्री ललित बजाज कोटकपूरा, श्री श्याम लाल आर्य बंगा, श्री यशपाल वालिया होशियारपुर शामिल हुये।

प्रभो! हमें निर्भय बना दो

ले०-श्री सुरेशचन्द्र जी, वेदालंकार एम-ए-एल-टी. आर्य समाज, गोरखपुर

इन्द्रः सुत्रामा स्ववां अवोभिः सुमृडीको भवतु विश्ववेदाः।
बाधतां द्वेषो अभयं कृणोतु सुवोर्यस्च पतयः स्याम।।

ऋ. 6।47।12

(सुत्रामा) उत्तम रक्षक (स्ववान्) आत्म शक्ति से युक्त (सुमृडीकः) उत्तम सुख देने वाला (विश्ववेदाः) सर्वज्ञ (इन्द्रः) प्रभु (अवोभिः) अपनी रक्षाओं के साथ हमारी रक्षा करने वाला (भवतु) होवे। (द्वेषः बांधतां) शत्रुओं का नाश करे, हमें (अभयं कृणोतु) अभय करें और हम (सुवीर्यस्य) उत्तम वीर्य के सामर्थ्य के (पतयः) स्वामी (स्याम) होवें।

इस मन्त्र में निर्भय रहने के लिए बताया गया है कि मनुष्य को यह समझ लेना चाहिए कि परमात्मा सबका उत्तम रक्षक और सब की आत्म शक्ति युक्त सर्वज्ञ हैं। अपनी रक्षक-शक्ति से वह हमारी पूर्ण रक्षा करे, हमारे शत्रुओं को दूर करे, हमें पूर्ण रीति से निर्भय करे, और उत्तम वीर्य सदा हमारे पास जागृत रहे।

'भय' संहारक है और 'आशा' जीवनदायिनी है, अर्थात् भय शिथिल कर देने वाला विष है, आशा जीवन दायक अमृत। भय किं कर्तव्य बिमूढता, निराशा और मृत्यु को जन्म देता है, आशा, प्रसन्नता शक्ति और जीवन को। भय ने कभी किसी की कोई सहायता नहीं की, आशा ने अनगिनत ऐसे व्यक्तियों के जीवन बचाये हैं जो मृत्यु के मुख में गए प्रतीत होते थे। पर, यह भय का भूत है क्या? भय का वैसे कोई अस्तित्व नहीं है। कल्पना इसे जन्म देती है। यह एक छाया है, मस्तिष्क का एक रोग है। भय नामक दुनिया में न तो कोई व्यक्ति है, न कोई शक्ति ही है। यदि इसके जीवन रस नाशक असर के सामने घुटने न टेके जायें, इसे अपने पर हावी होने में इसकी सहायता न की जाए, तो किसी की कोई हानि पहुंचाने की शक्ति इसमें नहीं है।

'भय' मस्तिष्क का कीड़ा है। असल में भय नामक कोई चीज नहीं है। भय पूर्ण भावनाएं नाशक है। ये हमारे सामने केवल अड़चनें पैदा करती हैं। भय मानना उतना ही हास्यास्पद है जितना पक्षी का थपेड़ों से, असंस्कृत का भूत से या बच्चे का जू-जू से।

इसलिए यह मंत्र कहता है कि भगवान् हमें भय से मुक्त करे। वास्तव में जिस शक्ति ने हमें जन्म दिया है। वह ऐश्वर्यशालिनी शक्ति प्रभु की है और वह प्रभु सर्वज्ञ, सर्वद्रष्टा है। वह अपनी सर्व-शक्तिमत्ता से सदा रक्षा कर रहा है:

भारतवर्ष में एक ग्राम कालड़ी की एक सच्ची घटना इसका प्रमाण है। कालड़ी ग्राम स्वामी शंकराचार्य की जन्मभूमि है। परन्तु जिस समय की यह घटना है, उन दिनों वहां हिन्दू नहीं, बल्कि ईसाई धर्म का ही प्रचार बढ़ रहा था। धड़ाधड़ लोग ईसाई बन रहे थे। यह देख कर कुछ हिन्दू सुधारकों के मन में बहुत दुःख हुआ। उन्होंने एक सभा की योजना की तो विरोधियों ने उसे भंग करने का निश्चय किया। एक महात्मा बुलाये गए। सभा की कार्यवाही शुरू होते ही विरोधियों ने ईंट पत्थर फैंकने शुरू किए। लोगों में घबराहट फैल गई। नेताओं के भी रंग उड़ने लगे। पर यह क्या? महात्मा जी तो ईंटों की परवाह किए बिना बोलते ही जा रहे थे। उनके लिए मानो वे ईंट पत्थर नहीं, फुल पत्ते थे, जिनके प्रहार सहते, वे मुस्कराते हुए अपने शब्दों से अमृत वर्षा किए जा रहे थे। पर आखिर कितनी देर ऐसे चल सकता था। चोटों के कारण शरीर से रक्त बहना शुरू हो गया और कुछ देर बाद अत्यन्त निर्बल अवस्था में महात्मा जी गिर पड़े। पर मूर्छित होने से पहले उन्होंने अन्तिम गर्जना की। अच्छा अगर तुम्हारी यह इच्छा है तो अब से मैं यहीं रहूंगा और तब तक वहां से हिलूंगा नहीं जब तक यहां हिन्दू धर्म का उद्धार न होगा। इस के बाद महात्मा जी वहां रूक गए, और धीरे-धीरे ईसाई बने सब हिन्दू अपने धर्म में लौट आए।

भय कितनी भयंकर वस्तु है, इसका प्रभाव हमें जीवन के अनेक भागों में दिखाई देता है। एक सर्जन के पास एक स्त्री आई और उसने कहना शुरू किया कि उसे अन्दर ही एक गिल्टी हो गई है। डाक्टर चार बार उसका आपरेशन कर चुका था और वह गिल्टी काट भी दी थी। एक बार बिजली का धक्का लगने से उसे यह फिर बहम हो गया कि उसे दुबारा गिल्टी हो गई है जौर बिना आपरेशन के वह किसी भी तरह ठीक नहीं की जा सकती। सर्जन ने उसे बहुत समझाया, पर गिल्टी का वहम या डर किसी भी तरह दूर न हो सका। सर्जन ने उसका नकली आपरेशन किया उस स्त्री को आपरेशन की मेज पर लिटा कर इतनी दवा सुंघा दी गई कि वह अर्ध मूर्छित हो गई। वह केवल सुन्न और अनुभव कर सकती थी, देख नहीं सकती थी। गर्जन और नर्स आपरेशन का अभियान कर रहे थे। रोगी के आपरेशन वाले अंग पर बर्फ का पानी बूंद-बूंद कर डालते रहे जिससे रोगी को मालूम हो मानो पट्टियां बांधी जा रही हैं, फिर उसे एंबुलैंस में डाल कर पहुंचाया गया। आपरेशन के इस अभिनय के फल-स्वरूप वह कमजोर हो गई। दस दिनों तक यह बिस्तर पर लेटी रही और अन्त में ठीक हो गई।

वास्तव में उसका गिल्टी का भय एक काल्पनिक भय था और वह कल्पना से ही दूर भी कर दिया गया। जीवन में हम भी वास्तव में कल्पना से ही भयभीत होते रहते हैं।

इस वेद मन्त्र में भयों से बचने के लिए और अपने जीवन के मार्ग को सफल बनाने के लिए बताया गया है कि लोगों? तुम भयभीत मत हो। डरो मत! क्यों कि सर्वज्ञ, सर्व द्रष्टा, सर्व शक्तिशाली प्रभु हमारा उत्तम रक्षक है। वह अपनी आत्मिक शक्ति से युक्त हो कर हमारा सदा रक्षण कर रहा है। उसके प्रति विश्वास लाने से हम सर्वत्र अभय हो सकते हैं। उस समय हमें उस अद्भुत साहस की प्राप्ति होगी कि संसार की कोई भी कठिनाई हमारा मार्ग न रोक सकेगी। वास्तव में होता यह है कि प्रभु के प्रति विश्वास की भावना रख कर हम उसके जितना निकट होते जाते है, उतनी ही हमारी शक्तियां बढ़ती जाती हैं। यदि हम उस प्रभु के साथ अपनी एकता का अनुभव कर लें तो हमारे जीवन में एक नया उत्साह, नया उल्लास व नई शक्ति आ जाएंगी।

सद्विचार मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाते हैं। ईश्वर स्मरण से ही हम उसके साथ स्वाभाविक सम्बन्ध बना लेते हैं। तब संसार में हमें कभी भी अकेलापन अनुभव नहीं होता, क्यों हमारे साथ सदा हमारा ईश्वर रहता है। उस महान सृष्टा, उस महान रक्षक से नाता जोड़ कर हम अपने निर्माण कार्य में हाथ बंटा सकते हैं। हमारा जीवन भी तभी सच्चा मानव जीवन होगा जब हम इस सुन्दर पृथ्वी को और भी सुन्दर बनायेंगे। मनुष्यता को ईश्वरत्व के पास ले जाएंगे। मनुष्य के भीतर एक ऐसा रूप बसा है जो बिल्कुल निष्कलंक और सुन्दर है, जो न कभी पैदा हुआ है और न कभी मरेगा वही यह आत्मा है जिसका यही स्वरूप कायम रखना हमारे जीवन का उद्देश्य है। ऐसी जो महान् आत्माएं स्वच्छ और निर्मल होती हैं, उनका परमेश्वर से अटूट सम्बन्ध हो जाता है और वे कभी डरती नहीं।

ईश्वर के साथ एकता कर हम सच्चे रूप को पहचान लेते हैं। इससे हमें विश्वास हो जाता है कि हम में ऐसी दिव्यता है जिसे कभी समाप्त नहीं किया जा सकता फिर मनुष्य किस से भयभीत होगा? किस से डरेगा।

याद रख लीजिए भयपूर्ण विचार हमारी शक्ति का नाश करते हैं, रोगों को जन्म देते है, शान्ति का अपहरण करते हैं, जब सफलता आप से मिलना चाहती है तो उसे रोक कर आप को असफलता का दर्शन कराते हैं।

इसलिए निराशा और भय के काले बादलों पर आंख गड़ाना बन्द कीजिए और आशा तथा अपनी आत्म-शक्ति का दर्शन कीजिए। चिन्ता की आदत छोड़िए और समुज्ज्वल भविष्य की ओर दृष्टि उठाइए। निराशापूर्ण विचारों और भय पूर्ण आदतों का भय लाद कर अपने सिर को न झुकाइए। गर्दन ऊंची करके सुन्दर भविष्य की ओर देखिए। जिस शक्ति ने आपको जन्म दिया है, वह अपने पंखों में भय, शोक, दुःख और रोग से मुक्ति का रसायन लिए चारों ओर, आपकी रक्षा के लिए उड़ रही है, तैर रही है, सर्वज्ञ आपकी रक्षा की चिन्ता कर रही है। फिर भय कैसा? जरा मुस्कराइए और उस शक्ति का स्वागत कीजिए। यही तो प्रभु की शक्ति है। कवि के शब्दों में आइए उससे कहें-

पहचान न पाया था जब तब तुम को हे मेरे जीवन धन।
तब तक जीवन दुःख स्त्रोत रहा तब तक सारा जन्म का

(शेष पृष्ठ 4 पर)

सम्पादकीय

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में सहयोग के लिये सभी आर्यजनों का हार्दिक धन्यवाद

25 अक्तूबर 2018 से 28 अक्तूबर 2018 तक नई दिल्ली में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति ने इस महासम्मेलन की शोभा में चार चांद लगा दिए। इस महासम्मेलन में भारत वर्ष के अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु उपस्थित रहे। इसके साथ-साथ पाकिस्तान, बंगलादेश, दक्षिण अफ्रीका, मॉरीशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, थाईलैण्ड, कैनेडा, फिजी, नेपाल, बर्मा, इंग्लैण्ड, कीनिया, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों से प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। इस महासम्मेलन में कार्यकर्ताओं का मनोबल, उत्साह देखने को मिला। इस महासम्मेलन के द्वारा विश्व भर में आर्यों की एकजुटता तथा संगठन की शक्ति का परिचय देखने को मिला है। महर्षि दयानन्द के कृण्वन्तो विश्वमार्यम् के उद्घोष को इसी प्रकार साकार किया जा सकता है क्योंकि महर्षि दयानन्द का उद्देश्य केवल भारतवर्ष का उपकार ही नहीं अपितु पूरे विश्व का उपकार करना था। इसी उद्देश्य को महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के छठे नियम में समाहित किया है। इस महासम्मेलन में यही दृश्य देखने को मिला था। कार्यक्रम के दो दिन पहले वीजा मिलने पर भी पाकिस्तान से आये आर्यजनों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (रजि.) के प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में पंजाब की सभी आर्य समाजों से भारी संख्या में आर्यजनों ने भाग लिया। पंजाब के सभी शहरों जालन्धर, लुधियाना, नवांशहर, पटियाला, बरनाला, बठिंडा, फरीदकोट, फिरोजपुर, पठानकोट, धारीवाल, बटाला, होशियारपुर, अमृतसर आदि अनेक स्थानों से लोगों का अपार जनसमूह बसों के द्वारा दिल्ली महासम्मेलन में पहुंचा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा इस महासम्मेलन में भाग लेने के लिए कई महीने पहले तैयारियां प्रारम्भ कर दी गई थी। पंजाब के सभी आर्यजनों ने बड़े उत्साह के साथ इस महासम्मेलन में भाग लिया। इस महासम्मेलन को लेकर पंजाब के लोगों में भारी उत्साह था। पंजाब के सभी आर्यजन सकारात्मक ऊर्जा लेकर इस सम्मेलन से लौटे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के यशस्वी प्रधान श्री सुदर्शन शर्मा जी के नेतृत्व में निरन्तर वेद प्रचार के कार्यों में संलग्न है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा समय-समय पर ऐसे महासम्मेलनों का आयोजन किया जाता है। इस सभी कार्यक्रमों में पंजाब की सभी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं द्वारा महत्वपूर्ण योगदान दिया जाता है। पंजाब के आर्यजनों का यही सहयोग अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में देखने को मिला है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब इस अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन में अतुलनीय सहयोग देने के लिए पंजाब के समस्त आर्य समाजों के अधिकारियों, कार्यकर्ताओं का हार्दिक धन्यवाद करती है।

यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन अपने आप में ऐतिहासिक समारोह था। भारत के महामहिम राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविन्द जी ने इस महासम्मेलन का उद्घाटन किया। अपने उद्बोधन में उन्होंने महर्षि दयानन्द और आर्य समाज द्वारा किए गये कार्यों का वर्णन किया। उन्होंने कहा कि जब अंध-विश्वासों और कुरीतियों ने समाज को जकड़ रखा था, ऐसे समय में स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने पुनर्जागरण और आत्म गौरव का संचार किया। वे सामाजिक और आध्यात्मिक सुधार के निर्भीक योद्धा थे। उन्होंने शिक्षा, समाज सुधार विशेषकर अस्पृश्यता-निवारण और महिला सशक्तिकरण के ऐसे प्रभावी कदम उठाए जो आज तक भारतीय समाज के लिए और पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक हैं। महामहिम राष्ट्रपति महोदय के उद्बोधन से आर्य समाज के कार्यकर्ताओं को नया जोश प्राप्त हुआ। इससे आर्य समाज को एक नई दिशा मिलेगी। इस महासम्मेलन में महाशय धर्मपाल जी का सभी को आशीर्वाद प्राप्त हुआ। महासम्मेलन की सफलता में महाशय जी एवं उनके परिवार से तन-मन और धन से सहयोग दिया। इतनी अधिक आयु होते हुए भी महाशय धर्मपाल जी कार्यक्रम में उपस्थित रहे जिससे आर्यजनों को प्रेरणा और उत्साह प्राप्त हुआ।

इस महासम्मेलन में दस हजार लोगों के द्वारा किये गये सामूहिक यज्ञ के द्वारा विश्व कीर्तिमान स्थापित किया गया है। यह दृश्य अद्भुत था। वातावरण वेद मन्त्र की पावन ऋचाओं से गूंज रहा था। ऐसे भक्तिमय वातावरण से आर्यजनों में आध्यात्मिक शक्ति का संचार हुआ। वर्तमान में प्रदूषण की समस्या को भी इसी प्रकार यज्ञ से दूर किया जा सकता है। समय-समय पर ऐसे विशाल सामूहिक यज्ञों का आयोजन करते रहना चाहिए।

इस अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आयोजकों की ओर से लोगों की रहने की व्यवस्था का प्रबन्ध बहुत सुन्दर किया गया था। इसमें विशेष योगदान आर्य वीर दल का रहा है। यात्रियों के स्टेशन से आने तथा कार्यक्रम स्थल से स्टेशन जाने के लिए 60 बसों का प्रबन्ध किया गया था। आर्यवीरों के द्वारा अतिथियों के स्वागत, भोजन की व्यवस्था तथा अन्य सभी गतिविधियों में सराहनीय योगदान दिया गया। यह अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन जिस भव्यता के साथ प्रारम्भ हुआ था उसी भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ। यह महासम्मेलन आर्य समाज की उन्नति के लिये मील का पत्थर सिद्ध होगा। इस महासम्मेलन के द्वारा आर्यों की एकजुटता का तथा संगठन का शक्ति का दृश्य देखने को मिला है। भिन्न-भिन्न विषयों पर आयोजित संगोष्ठियों के माध्यम से लोगों को आर्य समाज के सिद्धान्तों से परिचित किया। मुख्य पण्डाल के साथ-साथ अन्य छोटे-छोटे पण्ड़ालों में शंका समाधान, अन्धविश्वास निर्मूलन, समलैंगिकता, सामाजिक कुरीतियां आदि कार्यक्रमों के माध्यम से आम जनता को जागरूक किया गया।

भारी संख्या में साहित्य विक्रेताओं ने वैदिक साहित्य के स्टॉल लगाकर लोगों को जागरूक किया। महासम्मेलन में आने वाले सभी आर्यजन अपने साथ प्रचुर मात्रा में साहित्य लेकर गये।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य, मन्त्री श्री प्रकाश आर्य तथा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री धर्मपाल आर्य, महामन्त्री श्री विनय आर्य तथा सभी अधिकारियों का हार्दिक धन्यवाद करती है जिन्होंने पंजाब से गए हुए आर्यों का ठहरने का एवं भोजन की व्यवस्था का सुन्दर प्रबन्ध किया। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए आयोजकों की पूरी टीम बधाई की पात्र है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की तरफ से एक बार पुनः पंजाब की सभी आर्य समाजों का सहयोग के लिए धन्यवाद है तथा आगे भी वेद प्रचार के कार्यों में आपका सहयोग मिलता रहे, यही कामना करती है। महर्षि दयानन्द के मिशन को आगे बढ़ाने में सभी एकजुट होकर कार्य करेंगे और वेद की ज्योति को घर-घर तक पहुंचाने का प्रयास करेंगे।

प्रेम भारद्वाज
सम्पादक एवं सभा महामन्त्री

सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्लास से वेद सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

ले.-पं. खुशहाल चन्द्र आर्य C/o गोबिन्द राय आर्य एण्ड सन्ज १८० महात्मा गान्धी रोड़, (दो तल्ला) कोलकत्ता-700007

यह लेख मैंने महर्षि दयानन्द कृत अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समुल्लास से उद्घृत किया है। वेद सम्बन्धी ये प्रश्नोत्तर हर आर्य समाजी को ही नहीं बल्कि प्रत्येक व्यक्ति को जानने योग्य हैं। इससे ईश्वर और वेद सम्बन्धी अनेकों गहन विषयों को समझा जा सकता है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति के लिए अति उपयोगी है। इसी भावना से मैंने यह लेख लिखा है।

प्रश्न-किन के आत्मा में कब वेदों का प्रकाश किया ?

उत्तर-अग्नेर्वा ऋग्वेदो वायोर्यजुर्वेदः सूर्यात्सामवेदः।। शत

प्रथम अर्थात् सृष्टि के आदि में परमात्मा ने अग्नि, वायु, आदित्य तथा अङ्गिरा इन ऋषियों के आत्मा में एक एक वेद का प्रकाश किया।

प्रश्न-यो वै ब्रह्मणां विदधाति पूर्व यो वै वेदांश्च प्रहिणोति तस्मै।।

यह उपनिषद् का वचन है-इस वचन से ब्रह्मा जी के हृदय में वेदों का उपदेश किया है। फिर अग्न्यादि ऋषियों के आत्मा में क्या कहा ?

उत्तर-ब्रह्मा के आत्मा में अग्नि आदि के द्वारा स्थापित कराया। देखो! मनु ने क्या लिखा है।

अग्नि वायु रवि भ्यस्तु त्रयं ब्रह्मा सनातनम्।

दुदोह यज्ञसि द्ध्यर्थमृग्यजुः सामलक्षणम्।।(मनु)

जिस परमात्मा ने आदि सृष्टि में मनुष्यों को उत्पन्न करके अग्नि आदि चारों महर्षियों के द्वारा चारों वेद ब्रह्मा को प्राप्त कराये और उस ब्रह्मा ने अग्नि, वायु, अदित्य और अङ्गिग से ऋग्, यजुः, साम और अथर्ववेद का ग्रहण किया।

प्रश्न-उन चारों ही में वेदों का प्रकाश किया, अन्य में नहीं, इससे ईश्वर पक्षपाती होता है।

उत्तर-वे ही चार सब जीवों से अधिक पवित्रात्मा थे। अन्य उनके सदृश नहीं थे। इसलिए पवित्र विद्या का प्रकाश उन्हीं में किया।

प्रश्न-किसी देश-भाषा में प्रकाश न करके संस्कृत में क्यों किया?

उत्तर-जो किसी देश-भाषा में प्रकाश करता तो ईश्वर पक्षपाती हो जाता, क्योंकि जिस देश की भाषा में प्रकाश करता तो उनको सुगमता और विदेशियों के कठिनता वेदों के पढ़ने-पढ़ाने की होती। इसलिये संस्कृत ही में प्रकाश किया, जो किसी देश की भाषा नहीं और वेद भाषा अन्य सब भाषाओं का कारण है। उसी में वेदों का प्रकाश किया। जैसे ईश्वर की पृथिवी आदि सृष्टि सब देश और देश वालों के लिए एक सी और सब शिल्प विद्या के कारण है, वैसे परमेश्वर की विद्या की भाषा भी एक सी होनी चाहिये कि सब देश वालों को पढ़ने-पढ़ाने में तुल्य परिश्रम होने से ईश्वर पक्षपाती नहीं होता और सब भाषाओं का कारण भी है।

प्रश्न-वेद ईश्वरकृत हैं, अन्य कृत नहीं, इसमें क्या प्रमाण ?

उत्तर-(१) जैसा ईश्वर पवित्र, सर्वविद्यावित्, युद्ध गुण कर्मस्वभाव, न्यायकारी, दयालु आदि गुणवाला है, वैसे जिस पुस्तक में ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव के अनुकूल कथन हो, वह ईश्वरकृत है, अन्य नहीं।

(२) और जिसमें सृष्टि क्रम, प्रत्यक्षादि प्रमाण, आप्तों के और पवित्रात्मा के व्यवहार से विरूद्ध कथन न हो, वह ईश्वरोक्त।

(३) जैसा ईश्वर का निर्भय ज्ञान वैसा जिस पुस्तक में भ्रान्ति रहित ज्ञान को प्रतिपादन हो, वह ईश्वरोक्त।

(४) जैसा परमेश्वर है और जैसा सृष्टिक्रम रखा है, वैसा ही ईश्वर, सृष्टि, कार्य, कारण और जीव का प्रतिपादन जिसमें होवे।

(५) और जो प्रत्यक्षादि प्रमाण-विषयों से अविरूद्ध युद्धात्मा के स्वभाव से विरूद्ध न हो, वह परमेश्वरोक्त पुस्तक होता है।

इस प्रकार के वेद हैं। अन्य बाइबल, कुरान, आदि पुस्तकें नहीं।

प्रश्न-वेद की ईश्वर से होने की आवश्यकता कुछ भी नहीं, क्योंकि मनुष्य लोग क्रमशः ज्ञान बढ़ाते-बढ़ाते तत्पश्चात् पुस्तक भी बना लेंगे।

उत्तर-कभी नहीं बना सकते। क्योंकि बिना कारण के कार्योत्पत्ति का होना असम्भव है। जैसे जंगली मनुष्य सृष्टि को देख कर भी विद्वान् नहीं होते और अब भी किसी से पढ़े बिना कोई भी विद्वान् नहीं होता। इस प्रकार जो परमात्मा उन आदि सृष्टि के ऋषियों को वेद विद्या न पढ़ाता और वे अन्य को न पढ़ाते तो सब लोग अविद्वान् ही रह जाते। जैसे किसी के बालक को जन्म से एकान्त देश, अविद्वानों वा पशुओं के संग में रख देवे तो वह जैसा संग है। वैसा ही हो जायेगा। इसका दृष्टान्त जङ्गली भील आदि हैं। जब तक आर्यवर्त्त देश से शिक्षा नहीं गई थी। जब तक मिश्र, यूनान और यूरोप देश के मनुष्यों में कुछ भी विद्या नहीं हुई थी और यूरोप के कुलुम्बस आदि पुरूष अमेरिका में नहीं गये थे, तब तक वे भी सहस्त्रों, लाखों, करोड़ों वर्षों से मूर्ख अर्थात् विद्या ही न थे। पुनः सुशिक्षा के पाने से वे विद्वान् हो गये हैं। वैसे ही परमात्मा से सृष्टि के आदि में विद्या-शिक्षा की प्राप्ति से उत्तरोत्तर काल में विद्वान् होते गये।

सपूर्वेषामपि गुरूः काले नान वच्छे दात्।।(योग सूत्र)

जैसे वर्तमान समय में हम लोग अध्यापकों से पढ़ कर ही विद्वान् होते हैं, वैसे परमेश्वर सृष्टि के आरम्भ में उत्पन्न हुए अग्नि आदि ऋषियों का "गुरू" अर्थात् पढ़ाने द्वारा है। क्योंकि जैसे जीव सुषुप्ति और प्रलय में ज्ञानरहित हो जाते हैं, वैसा परमेश्वर नहीं होता। उसका ज्ञान नित्य है, इसलिये यह निश्चित जानना चाहिए कि बिना निमित्त से नैमित्तिक अर्थ सिद्ध कभी नहीं होता।

प्रश्न-वेद संस्कृत भाषा में प्रकाशित हुए और वे अग्नि आदि ऋषि लोग उस संस्कृत भाषा को नहीं जानते थे, फिर वेदों का अर्थ उन्होंने कैसे जाना?

उत्तर-परमेश्वर ने जनाया और धर्मात्मा योगी महर्षि लोग जब-जब जिस जिस के अर्थ की जानने की इच्छा करके ध्यानावस्थित हो परमेश्वर के स्वरूप में समाधिस्थ हुए तब-तब परमात्मा ने अभीष्ट मन्त्रों के अर्थ जनाये। जब बहुतों के आत्माओं में वेदार्थ प्रकाश हुआ तब ऋषि-मुनियों ने वह अर्थ और ऋषि-मुनियों (आदि चार ऋषियों के लिए आया है) के इतिहास पूर्वक ग्रन्थ बनाये। उनका नाम ब्राह्मण अर्थात् "ब्रह्मा" जो वेद उनका व्याख्यान ग्रन्थ होने से ब्राह्मण ग्रन्थ नाम हुआ। और:

ऋषयों मन्त्र दृष्टयः मन्त्रान्सम्प्रादुः।।(निरूक्त)

अर्थ-जिस-जिस मन्त्रार्थ का दर्शन, जिस-जिस ऋषि को हुआ और प्रथम ही जिसके पहले उस मन्त्र का अर्थ किसी ने प्रकाशित नहीं किया था, इसलिए अद्यवाधि उस -उस मन्त्र के साथ ऋषि का नाम स्मरणार्थ लिखा जाता है। जो कोई ऋषियों को मन्त्रकर्त्ता बतलावे, उसको मिथ्यावादी समझें। वे तो मन्त्रों के अर्थ प्रकाशन हैं, न कि मन्त्रकर्त्ता।

प्रश्न-वेद किन ग्रन्थों का नाम है?

उत्तर-ऋक्, यजुः, सन्म और अथर्व मन्त्र संहिताओं का। अन्य का नहीं।

प्रश्न-वेद नित्य है, वा अनित्य?

उत्तर-नित्य है। क्योंकि परमेश्वर के नित्य होने से उसके ज्ञानादि गुण भी नित्य है। जो नित्य पदार्थ है उनके गुण, कर्म, स्वभाव नित्य और अनित्य द्रव्य के अनित्य होते हैं।

पृष्ठ 2 का शेष-प्रभो! हमें निर्भय...

अपने सिर को न झुकाइए। गर्दन ऊंची करके सुन्दर भविष्य की ओर देखिए। जिस शक्ति ने आपको जन्म दिया है, वह अपने पंखों में भय, शोक, दुःख और रोग से मुक्ति का रसायन लिए चारों ओर, आपकी रक्षा के लिए उड़ रही है, तैर रही है, सर्वज्ञ आपकी रक्षा की चिन्ता कर रही है। फिर भय कैसा? जरा मुस्कराइए और उस शक्ति का स्वागत कीजिए। यही तो प्रभु की शक्ति है। कवि के शब्दों में आइए उससे कहें-

पहचान न पाया था जब तब तुम को हे मेरे जीवन धन।

तब तक जीवन दुःख स्त्रोत रहा तब तक सारा जन्म का बन्धन।

बाधाओं पर थी बाधाए, वैरी दल पर था बरी दल।

कठिनाई पर भी कठिनाई, दुर्जय था यह संसार सकल।

हे विश्वनाथ! हे विशम्भर! पर जब से शरण गही तेरी।

तब से तो मैं दिग्विजयी हूं, तब से संसृति दासी मरी।

तेरे चरणों में मनको जब लगा चुका तो क्या डर है।

वांछित अब देने को उद्यत आहा! देखो दुनिया भर है।।

मन को जीता सब को जीता तुम को पाया सबको पाया।

है मरना जीना खेल मुझे, अब तेरे रस्ते पर आया।।

मुझ को अब कोई कभी नहीं, विश्वकोष मेरा ही धन,

मुझ में अब कोई कमी नहीं, हूं पूर्ण पूर्ण अब मैं भगवान्।।

उत्साह, उमंग, नवचेतना के सन्देश देता हुआ आर्यों का महाकुंभ–अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2018 आर्य समाज के इतिहास में एक और गौरवमय अध्याय बन गया

प्रकाश आर्य, मन्त्री, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली

यह विचार कोरी कल्पना से या भावनात्मक दृष्टि से नहीं है यथार्थता है, जन-जन की भावना है। असंभव कुछ नहीं, आवश्यकता है सही कार्य के निर्णय की, कार्य की, सही योजना की, और उसके साथ पूर्ण पुरुषार्थ की। यह सब कहने और सुनने में तो कई बार आता रहा है किन्तु उसका प्रत्यक्ष परिणाम या उसका फल अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन को देखने पर हुआ।

उपस्थित आर्यजनों ने अपनी कल्पना से ऊपर अकल्पनीय दृश्य देखकर आश्चर्य तो किया ही पर मुख से अकस्मात् निकला आह... वाह-वाह..., गजब है..., कितना भव्य है ऐसा तो कोई सोच भी नहीं सकता था। आदि विचार प्रत्येक आगन्तुक के भावों में या वाणी में और इसके भी अधिक उनकी विस्मयकारी आंखों की और चेहरे की चमक से, प्रसन्नता से प्रदर्शित हो रही थी।

प्रत्यक्ष रूप से मिलने वाला कोई व्यक्ति मिलता तो सबसे पहला शब्द यही होता बधाई हो, बहुत धन्यवाद इतना बड़ा और भव्य कार्यक्रम तो कभी सोचा ही नहीं, आनन्द आ गया। इस प्रकार की अभिव्यक्ति सभा के पदाधिकारियों या कार्यकर्ताओं को सुनने को मिल रही थीं। आर्यजन आपस में ऐसे मिल रहे थे जैसे किसी पर्व पर प्रसन्न होते हैं। प्रत्येक व्यक्ति इस आयोजन को सराह रहा था। कई कहते **''भूतो न भविष्यति''** हम कहते भाई भूत का तो माना जा सकता है किन्तु भविष्य न कहो, 2024 में महर्षि का 200वां जन्म वर्ष है उसे इससे भी बृहद मनायेंगे। यह सब शब्दों, विचारों से पूर्ण भाव-भंगिमा का होना स्वाभाविक ही था, इसमें कोई मिथ्या भाव या अतिश्योक्ति नहीं है।

कार्यक्रम को भव्य विशाल और सार्थकता प्रदान करने में तीन पहलुओं को देखना होगा। पहला है कार्यक्रम का विचार, उसकी योजना और पूरी रूपरेखा निर्मित करना। जिस प्रकार किसी इमारत के लिए एक व्यवस्थित, पूर्व से सोची-विचारी योजना को कागज पर चित्रित किया जाता है जिसे नक्शा कहते हैं, यह नक्शा एक प्रशिक्षित इन्जीनियर के मार्गदर्शन में तैयार होता है, उसके अनुसार भवन का निर्माण होता है, जैसा नक्शा वैसा भवन। ठीक उसी प्रकार इस कार्यक्रम की पूर्व प्लानिंग कई माह से होती रही जिसमें सार्वदेशिक सभा के प्रमुख अधिकारी, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के बड़ी संख्या में अधिकारी, अन्य कई आर्य समाज के वरिष्ठ नेता व कार्यकर्ताओं के द्वारा एक लम्बे समय के विचार विमर्श के पश्चात् अनेक प्रबुद्ध विचारशील आर्यजनों ने सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य के नेतृत्व में इसे अन्तिम रूप दिया। भाई धर्मपाल आर्य को सम्मेलन का संयोजक मनोनीत किया था, उनके साथ ही श्री विनय आर्य की सक्रियता इसकी एक विशेष कड़ी रही। जब योजना अच्छी थी तो उसका व्यवहारिक रूप तो अच्छा अवश्यमेव होना था।

कार्यक्रम सफलता का दूसरा पहलू था-उस योजना का क्रियान्वयन करने वाले आर्यजन। **इसमें पहले पैसा,** संसार में पैसा सब कुछ नहीं है, किन्तु बहुत कुछ है, इससे कोई मना नहीं कर सकता। योजना का आधार धन होता है। यदि धन की व्यवस्था प्रचुर मात्रा में नहीं होती तो कितनी भी सुन्दर योजना होती वह योजना, योजना ही रह जाती। परमात्मा की कृपा से महर्षि व वैदिक धर्म अनुयायी भामाशाह बनकर आगे आये और कार्यकर्ताओं को निश्चित कर दिया, इस महान कार्य की तैयारी के लिए।

इसमें सर्वप्रथम वर्तमान आर्य जगत के सर्वाधिक तन-मन-धन से सहयोगी आर्य समाज के भामाशाह कार्यक्रम के स्वागताध्यक्ष महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.) कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार में भी बहुत बड़ा सहयोग रहा। महाशय जी का उत्साह व सहयोग कितना था वह उनकी इस भावना से आप जान सकते हैं-**''सम्मेलन में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की ऐसी आवभगत करना जैसे जंवाई राजा की होती है। खाने-पीने में बढ़िया भोजन और शुद्ध घी का उपयोग हो।''** इसके साथ ही इस श्रृंखला में आर्थिक बड़े सहयोगी की दृष्टि से सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य जी (जे.बी. एम.), श्री मुंजाल परिवार, श्री अशोक जी चौहान (एमिटी), श्री दीन दयाल जी गुप्ता (डॉलर), धर्मपाल आर्य। इसके अतिरिक्त प्रान्तीय सभाओं से उनमें सबसे बड़ा सहयोग दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का प्राप्त हुआ। जिन महानुभावों ने सम्मेलन के पूर्व सहयोग नहीं दिया था, उन्होंने सम्मेलन स्थल पर आकर अपना आर्थिक सहयोग दिया, जिनकी संख्या हजारों में रही। इस यज्ञ में छोटी से छोटी राशि देने वाले भी बड़े उत्साह से राशि देकर अपने को भाग्यशाली मान रहे थे। इस प्रकार आर्थिक सहयोग देने हेतु पूरा आर्य जगत तैयार था।

इसी का दूसरा पहलू है-कार्यक्रम में उपस्थिति यह एक अद्भुत दृश्य था, जब हजारों-हजारों की संख्या में आर्यजन दिखाई पड़ते। ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे किसी नगर या ग्राम में कोई यात्रा-मेला लगा हुआ है, जिसमें बच्चे, जवान, बूढ़े सभी देखने के लिए आए हुए हैं।

यदि सारी व्यवस्थाएं ठीक हो जाती, विद्वान वक्ता भी उपस्थित हो जाते किन्तु श्रोता के रूप में उपस्थिति कम होती तो? फिर तो इस कारण से सारा किया गया प्रयास व्यर्थ चला जाता। पूरे कार्यक्रम की सार्थकता, शोभा, बड़ी संख्या में उपस्थित श्रोताओं के कारण हुई।

कार्यक्रम की सफलता हेतु उपरोक्त तीनों कारण उपलब्ध थे, इसमें प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से हजारों कार्यकर्त्ताओं का अथक पुरुषार्थ, दानदाताओं, विद्वानों का सहयोग और परमपिता परमात्मा की अपार कृपा रही। इसलिए यह इतना भव्य व सफल हुआ।

इसी का तीसरा पहलू है कार्यकर्ताओं द्वारा इस योजना को सफल बनाने के लिए प्रयास। इस संबंध में मैं किसका नाम लूं किसका न लूं, यह एक बड़ी उलझन वाली स्थिति है। पूरे कार्यक्रम में जो कार्यकर्ताओं का मनोबल, उत्साह की पराकाष्ठा देखने में आई उसे जुनून शब्द से समझा जा सकता है। तात्पर्य यह कि मनुष्य की उसी स्थिति को जुनून कहा जाता है जिसमें वह कुछ पाने के लिए अथवा कुछ कर गुजरने के लिए अपनी पूरी शक्ति और सब कुछ दांव पर लगाकर भी उसे प्राप्त करने का प्रयास करता है। वही जुनून अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन की सफलता के लिए जी जान से जुटे कार्यकर्ताओं में देखने को मिला। सक्रियता, उत्साह और लक्ष्य जब तीनों का मिश्रण हो जाए तो असफलता का कोई कारण ही नहीं बनता, जो आँखों ने देखा, कानों ने सुना उसकी कल्पना तो हमें पहले ही हो चुकी थी। गांव-गांव, शहर, प्रान्तीय सभाएं और भारत के बाहर कुछ देशों में जाकर प्रत्यक्ष रूप से सम्पर्क करने का परिणाम इतनी विशाल जनसमूह की उपस्थिति एक स्थान पर हुई। निरन्तर कार्यकर्त्ताओं से और आर्यजनों से सम्पर्क बना रहा। बार-बार उन्हें आने के लिए आह्वान किया गया। इसके पश्चात् रातदिन कार्यकर्ता इसमें जुटे रहे, जैसे-जैसे समय आ रहा था वैसे-वैसे कार्यकर्ताओं की सक्रियता जिम्मेदारियां और मन में चिन्ता बढ़ती जा रही थी। चिन्ता इसलिए बढ़ रही थी कि जो अनुमान था उससे अधिक उपस्थिति का अनुमान हो गया था। यह भी हो गया था कि इतने सारे व्यक्तियों की व्यवस्था जो कठिन कार्य है वह कहीं बिगड़ न जाए किन्तु आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली और दिल्ली की सारी आर्य समाजें उनके सारे सदस्य विशेषकर आर्यवीर दल जो जगबीर सिंह और बृहस्पति जी आर्य के सान्निध्य में कार्य कर रहा था वह विशेष सहयोगी रहा। 60 बसें जो यात्रियों को लाने ले जाने का कार्य रात-दिन कर रही थीं उससे आर्यवीर दल की बड़ी हिस्सेदारी रही। सभी कार्यकर्ताओं व दिल्ली वासी अतिथि देव की परम्परा को निर्वाह करने में जुट गए और उसमें वे सफल हो गए, इतनी आत्मीयता

(शेष पृष्ठ 6 पर)

पृष्ठ 5 का शेष-उत्साह, उमंग, नवचेतना...

इतना समर्पण परिवार की परिवार जिस कार्य को पूर्ण करने में लगे हों, वहां ऐसी भव्यता होना आश्चर्य वाली बात नहीं है। इस कार्यक्रम में देश के कौने-कौने से आर्यजन पहुंचे, कार्यकर्ता के रूप में भी उनका सहयोग प्राप्त होता रहा। भावनात्मक और आत्मिक संबल भी उनसे मिलता रहा। जो इस कार्यक्रम का एक संबल रहा।

चौथा बिन्दु था, कार्यक्रम को गरिमा प्रदान करने वाले कार्यक्रम और उनकी प्रस्तुति के लिए आमन्त्रित वक्तागण, विद्वान अतिथि एवं श्रोतागण।

इस कार्यक्रम में तीनों ही बातों का पूर्ण समावेश था। कार्यक्रम के जो सत्र थे प्रत्येक सत्र समाज, राष्ट्र, वैदिक धर्म कुरीतियों एवं पाखण्ड से संबंधित थे और प्रत्येक विषय पर जो वक्ता आमन्त्रित किए गए थे वे बहुत ही विद्वता पूर्ण सामयिक परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए उनके उद्बोधन हुए। स्थापित भजनोपदेशकों की उपस्थित हुई उपस्थिति की दृष्टि से भारत वर्ष के अनेक क्षेत्र से श्रद्धालु उपस्थित रहे 2000 से अधिक आर्यजनों की 28 देशों से उपस्थिति रही। जिसमें पाकिस्तान, बंगला देश, दक्षिण अफ्रीका, मॉरिशस, सूरीनाम, हॉलैण्ड, न्यूजीलैण्ड, सिंगापुर, थाईलैण्ड, कैनेडा, फिजी, नेपाल, बर्मा, इंग्लैण्ड, कीनिया, अमेरिका, आस्ट्रेलिया आदि देशों से प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे। इतने प्रतिनिधियों का एक उद्देश्य के लिए उपस्थिति होना कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाने के लिए था।

आगन्तुक महानुभाव-कार्यक्रम में पधारने वाले संन्यासी, विद्वान, भजनोपदेशक एवं सामाजिक व राजनैतिक दृष्टि से पहचान रखने वाले 500 से अधिक महानुभाव पधारे थे।

वक्ता के रूप में अनेक संन्यासीगण और विद्वानों को आमन्त्रित किया गया था जिसमें स्वामी धर्मानन्द जी, स्वामी प्रणवानन्द जी, स्वामी देवव्रत जी, स्वामी विवेकानन्द जी,स्वामी सम्पूर्णानन्द जी,स्वामी व्रतानन्द जी, स्वामी सदानन्द जी, स्वामी गोविन्दागिरी जी, स्वामी श्रद्धानन्द जी, स्वामी शारदानन्द जी, स्वामी सुधानन्द जी, स्वामी चिदानन्द जी, स्वामी विदेह योगी जी, स्वामी ब्रह्मानन्द जी, स्वामी धर्ममुनि जी, साध्वी उत्तामयति जी, साध्वी पुष्पा जी।

विद्वान-डॉ. सोमदेव शास्त्री, डॉ वेदपाल जी, डॉ. महेन्द्र अग्रवाल जी, डॉ. ज्वलन्त जी, डॉ. प्रशस्य मित्र जी, आचार्य सत्यानन्द वेदवागीश जी, आचार्य वागीश जी (एटा), आचार्य वेद प्रकाश श्रोत्रिय, डॉ. महेश वेदालंकार, आचार्य अग्निव्रत जी, आचार्य सनत कुमार जी, डॉ. जयेन्द्र (नोएडा), डॉ. कर्णदेव जी, आचार्य पुनीत शास्त्री जी, डॉ. रामकृष्ण शास्त्री जी, डॉ. वीर पाल विद्यालंकार जी, डॉ. दुलाल शास्त्री जी, डॉ. सूर्या देवी जी, डॉ. नन्दिता जी, डॉ. अन्नपूर्णा जी, डॉ. प्रियवन्दा जी, आचार्या गायत्री जी (नोएड़ा), डॉ. पवित्रा विद्यालंकार जी, डॉ. उमा आर्या जी।

भजनोपदेशक-योगेश दत्त जी, पं, सत्यपाल जी पथिक, नरेश दत्त जी, कुलदीप जी, अंजली जी, कुलदीप विद्यार्थी जी, श्री दिनेश पथिक, घनश्याम प्रेमी जी, जगत वर्मा जी, आचार्य अशोक जी, आचार्य मोहित शास्त्री जी, भानुप्रताप शास्त्री जी, केशवदेव शर्मा जी, कल्याण देव जी।

कार्यक्रम का प्रारंभ महाशय धर्मपाल जी (एम. डी. एच.) एवं सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र आर्य के करकमलों से ओ३म् ध्वजारोहण कर किया गया। टाण्डा की कन्याओं ने ध्वज गीत गाया। तत्पश्चात् कार्यक्रम का उद्घाटन भारत के राष्ट्रपति माननीय राम नाथ जी कोविन्द के माध्यम से हुआ। अपने उद्बोधन में पूर्व परिचय में परिवार के सदस्यों का आर्य समाज से जुड़ने एवं स्वयं को कानपुर के आर्य विद्यालय से शिक्षा ग्रहण करना बताया। इस अवसर पर हिमाचल के राज्यपाल माननीय आचार्य देवव्रत जी, सिक्किम के राज्यपाल माननीय गंगा प्रसाद जी, केन्द्रीय मन्त्री श्री हर्ष वर्धन जी, श्री सत्यपाल सिंह जी, सांसद श्री स्वामी सुमेधानन्द जी, स्वामी गोविन्द गिरी जी आदि की उपस्थिति रही। इसके अतिरिक्त उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री योगी आदित्यनाथ जी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर खट्टर, वित्तमन्त्री श्री कैप्टन अभिमन्यु, योग गुरु स्वामी रामदेव जी (पतंजलि), आचार्य बाल कृष्ण जी तथा समापन के अवसर पर भारत के गृहमंत्री राजनाथ सिंह जी, इसके अतिरिक्त विश्व हिन्दू परिषद, आर. एस. एस. तथा कांग्रेस के वरिष्ठ नेता श्री रमाकान्त गोस्वामी, दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया आदि उपस्थित थे। सबने अपने उद्बोधन से उपस्थित आर्यजनों को लाभान्वित किया।

उपरोक्त कारणों से कार्य की गंभीरता का सृजन हुआ जिसमें सभी क्षेत्र के महानुभावों का पूर्ण योगदान रहा। कार्यक्रम स्थल इतना विशाल था कि जिसमें एक स्वस्थ आदमी को भी पूरी तरह देखने में परेशानी हो रही थी, थकान हो जाती थी, इसलिए वृद्धजनों के लिए या जो पैदल नहीं चल सकते थे उनके लिए 10 ई-रिक्शा की निःशुल्क भ्रमण व्यवस्था की गई थी, जिसमें हजारों व्यक्ति बैठकर वांछित स्थान पर आ-जा रहे थे। कार्यक्रम का पाण्डाल इतना भव्य और विशाल बना, जो दिल्ली की राजधानी में संभवतः नगण्य से स्थानों पर ही देखा जा सकता है, जिसमें बैठने की 12 से 15 हजार व्यक्तियों की क्षमता थी। उपस्थिति का पूर्व अनुमान होने के कारण मुख्य पाण्डाल के बाहर बड़े-बड़े स्क्रीन लगा रखे थे, जिनमें हजारों व्यक्ति पाण्डाल के बाहर भी देखते पाए गए। पाण्डाल पूरी तरह भरा रहा। इसके अतिरिक्त 16 कक्ष अलग से थे जिनमें अलग-अलग विषयों पर विद्वान लोग गोष्ठियां कर रहे थे। बहुत ही विस्तृत अभूतपूर्व प्रदर्शनी जिसमें हजारों चित्र लगे थे आकर्षण का मुख्य केन्द्र था।

दक्षिण अफ्रीका की मूल कन्याओं ने वेद मन्त्र पाठ, हवन व भजन तथा साध्वी मैत्रेयी द्वारा संन्यास एक विशेष कार्य था। इस अवसर पर सन्यास व वानप्रस्थ दीक्षा ली गई।

कार्यक्रम की विशेषता-यह थी कि परमात्मा की कृपा से हजारों की दैनिक उपस्थिति में किसी भी प्रकार की कोई दुर्घटना घटित नहीं हुई, कोई अव्यवस्था नहीं हुई और मौसम ने अपना पूर्ण साथ दिया।

प्रत्येक ने यही कहा कि 2012 से भी अच्छी सर्वसुविधा युक्त यह कार्यक्रम रहा।

साहित्य-के लगभग 200 स्टॉल लगे थे जितना साहित्य व अन्य सामग्री इस अवसर पर वितरित हुई, उतनी कहीं कभी नहीं हुई, यह अपने आप में एक विशेषता रही।

कार्यक्रम स्थल अभूतपूर्व था-वैसे तो पूरा कार्यक्रम स्थल ही अपने आप में सुसज्जित, सुन्दर, अल्पनीय, साजसज्जा को देखते हुए मन्त्रमुग्ध कर देने वाला था। मुख्य द्वार इतना विशाल और आकर्षक था, जिसे रास्ते से गुजरने वाला हर कोई देखने के लिए रुक कर देखता। इसके अतिरिक्त कुछ और विशेष कार्यक्रमों की सूची भी है जो पहली बार हुए। दिल्ली के अन्तर्गत स्थित विद्यालय के बच्चों की ओर से बहुत ही सैद्धांतिक तथा आर्य समाज के इतिहास पर अन्धविश्वास निवारण के लिए लघु नाटिकाएं प्रस्तुत की गई जिसे सभी ने सराहा।

मुख्य पाण्डाल के अतिरिक्त अलग-अलग छोटे-छोटे 16 पाण्डाल लगे थे, जिनमें निरन्तर गोष्ठियां चल रही थीं, जिनमें प्रश्न-उत्तर, शंका समाधान, प्रदर्शनी, यज्ञ, विज्ञान आदि पर विद्वान प्रवचन कर रहे थे।

लेजर शो-महर्षि दयानन्द व आर्य समाज की प्रमुख घटनाओं पर लेजर शो का प्रसारण अद्भुत था, जिसे पहली बार देखा गया। स्थान-स्थान पर महर्षि के चित्र व सन्देश, वेद वाक्य आदि लगाए गए थे।

वर्ल्ड रिकार्ड बना-विशाल स्थल पर 10,000 यज्ञिकों द्वारा एक साथ यज्ञ करने का पहला अवसर था। विहंगम दृश्य आत्मविभोर कर रहा था। संसार में यह पहला अवसर था जब इतनी बड़ी संख्या में इसे सम्पन्न करवाया गया। इसे गोल्ड वर्ल्ड ने विश्व रिकार्ड में दर्ज किया गया।

गुरुकुल-गौशाला-निरन्तर यज्ञ-गुरुकुल व्यवस्था किस प्रकार होती है, किस प्रकार वहां की वेशभूषा दिनचर्या होती है, रहने की प्राचीन समय से क्या व्यवस्था, किस प्रकार आचार्य शिक्षा प्रदान करते थे, गौशाला किस प्रकार होती है आदि बातों को एक छोटे रूप में निर्मित कर निवास, प्रवचन, यज्ञ आदि बताया जा रहा था, जहां बड़ी संख्या में निरन्तर उपस्थिति बनी रही।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 6 का शेष-उत्साह, उमंग, नवचेतना...

मुख्य यज्ञशाला-एक बहुत विशाल स्थल में बनी थी जिसकी भव्यता अपने आप में सबको आकर्षित कर रही थी। यज्ञ में ब्रह्मा के रूप में देश के ख्यातिनाम विद्वान विदूषी अलग-अलग समय में यज्ञ वेदी को सुशोभित करते रहे। सस्वर मन्त्रपाठ शिवगंज, चोटीपुरा, देहरादून, वाराणसी, हाथरस आदि गुरुकुल की कन्याओं द्वारा किया गया।

छोटी यज्ञशाला-इसके अतिरिक्त पास में ही एक छोटी यज्ञशाला निर्मित की गई थी, जिसमें निरन्तर यज्ञ चल रहा था। एक समय में 8 सदस्य बैठकर यज्ञ कर सकते थे। यह व्यवस्था दिल्ली की आर्य समाजों के पुरोहितगणों द्वारा संचालित थी। इसमें भी दिनभर यज्ञ के लिए यजमान उपलब्ध रहे।

भोजन व्यवस्था-इतनी बड़ी कि 30 से 40 हजार भोजन करने वालों की उपस्थिति में किसी को भोजन हेतु इन्तजार न करना पड़े, लम्बी पंक्ति में खड़ा न होना पड़े, खाद्य पदार्थो की कमी न रहे, एक साथ कई प्रकार के व्यंजन उपलब्ध हों, यह सुनने में अविश्वसनीय लग रहा हो, किन्तु यह हुआ है। प्रत्येक आगन्तुक के लिए यह एक अचम्भा था। इस हेतु विशाल भोजनशाला, भोजन करने हेतु विशाल परिसर और निरन्तर चल रही व्यवस्था जिसमें सैकड़ों स्वयं सेवक व आर्यजन सहयोग कर रहे थे, उनके प्रयास से यह संभव हो सका। हर कोई भोजन में बने पदार्थो की पृथक-पृथक वैरायटी और स्वादिष्ट होने की प्रशंसा कर रहा था।

इसके अतिरिक्त-खाने-पीने व भोजन बाजार से 30 प्रतिशत कम मूल्य पर दुकानदारों द्वारा व्यवस्था की गई, जहां शुद्ध सात्विक भोजन व खाद्य पदार्थ उपलब्ध थे। कुछ दुकानों पर तरह-तरह की मिठाई, नमकीन, चाट और भोजन उपलब्ध था। इसका उपयोग भी खूब हुआ।

सन्देश-आर्य समाज के विद्वान, सन्त, संन्यासी या पदाधिकारी तो आर्य समाज की बात महर्षि दयानन्द की प्रशंसा करते ही हैं, करेंगे ही। इसका प्रभाव भी होता ही है किन्तु आपकी बात जब ऐसा कोई व्यक्ति जो प्रत्यक्ष रूप से आर्य समाज का कोई पदाधिकारी या सदस्य नहीं है, समाज में एक महत्वपूर्ण पद पर है यदि वह आपकी बात कहता है तो सारा संसार उसे अधिक महत्त्व देता है उससे प्रभावित होता है।

कार्यक्रम का लाईव प्रसार-आस्था टी.वी. चैनल पर हो रहा था, यू ट्यूब, फेसबुक जैसे माध्यमों से भी कार्यक्रम की जानकारी प्रसारित हो रही थी। जिसे कार्यक्रम स्थल के अतिरिक्त करोड़ों व्यक्ति अनेकों देशों में देख रहे थे। वक्ताओं द्वारा वैदिक धर्म की विशेषता आर्य समाज का योगदान और आवश्यकता पर विचार प्रकट हो रहे थे। ऐसे प्रेरणास्पद वैदिक धर्म व आर्य समाज से संबंधित विचार भारत के माननीय राष्ट्रपति राम नाथ कोविन्द जी के द्वारा हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी, सिक्किम के राज्यपाल माननीय श्री गंगा प्रसाद जी द्वारा, आसाम के राज्यपाल माननीय श्री जगदीश मुखी जी, इसके अतिरिक्त केन्द्रीय मन्त्री श्री हर्षवर्धन जी, केन्द्रीय मन्त्री, डॉ. सत्यपाल सिंह जी, केन्द्रीय परिवहन मन्त्री श्री गडकरी जी, हरियाणा के मुख्यमन्त्री श्री मनोहर खट्टर एवं, यू. पी. के मुख्यमन्त्री योगी आदित्य नाथ जी, दिल्ली प्रदेश के उपमन्त्री श्री मनीष सिसोदिया तथा भारत के गृहमन्त्री श्री राज नाथ सिंह जी, स्वामी गोविन्द गिरी जी (भारत माता मन्दिर हरिद्वार)। सभी माननीय वक्ताओं, आर्य समाज की श्रेष्ठता और आवश्यकता पर बड़ी मजबूती से व्याख्यान दिए। इससे पूरे मानव समाज पर आर्य समाज का एक अच्छा परिचय उसके कार्यों एवं महत्व को प्रोत्साहन मिला।

समलैंगिकता एवं यौन संबंधों की स्वतन्त्रता जैसे विषय पर चर्चा कर उससे समाज को बचाने के लिए भारत सरकार को ज्ञापन दिया।

जातिवाद, आरक्षण, नशामुक्ति जैसे विषयों पर गंभीर चर्चा कर इन बुराईयों से समाज को दूर करने पर चर्चा हुई।

वेद सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन, महिला सम्मेलन, आर्य परिवार सम्मेलन, अन्धविश्वास निवारण सम्मेलन, आर्य वीर सम्मेलन, संस्कृति एवं सामाजिक चेतना सम्मेलन, कवि सम्मेलन व अनेक विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

आर्य समाज के पूर्व में भी बड़े-बड़े भव्य आयोजन होते आये हैं, उनसे तुलना करना अज्ञानता है वे जिस परिस्थिति में हुए उसके अनुसार उनका महत्त्व था। आज परिस्थितियां, साधन, तकनीकी व्यवस्था सब बदले हुए हैं। इसलिए कार्यक्रम का स्वरूप, व्यवस्था और विशाल भव्यता अभूतपूर्व थी।

प्रत्येक कार्यक्रम व्यवस्थित हो, सार्थक हो इसका पूर्ण प्रयास किया गया। कार्यक्रमों को ठीक से संचालित करना एक महत्त्वपूर्ण कड़ी होती है, इसलिए कार्यक्रम के व्यवस्थित संचालन हेतु कुशल व श्रेष्ठ अनुभवी वक्ताओं को सौंपी थी, जिसमें श्री विनय आर्य, श्री विनय वेदालंकार, श्री राजेन्द्र विद्यालंकार, श्री अशोक जी आर्य (उदयपुर), श्री वाचोनिधी आर्य, श्रीमती मृदुला चौहान, डॉ. सुरेन्द्र कुमार जी (गुड़गांव), श्रीमती सुदेश आर्या जी, श्री सूर्य प्रसाद कीरे (हालैण्ड), श्री सुरेन्द्र कुमार रैली जी, श्री धर्मपाल आर्य, स्मारिका संयोजन श्री अजय सहगल, श्री सत्यवीर जी शास्त्री (अमरावती), श्री व्यासनन्दन जी शास्त्री (बिहार), श्री सतीश चड्ड़ा जी, आचार्य विरेन्द्र विक्रम (दिल्ली), डॉ. दक्षदेव जी (इन्दौर) आदि थे।

सार्वदेशिक सभा प्रधान श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य की सूझबूझ व कार्यक्रम को बड़ा सहयोग मिला। बीच में कुछ समय अस्वस्थ हो गए किन्तु उस स्थिति में भी दिल्ली रहकर रातदिन कार्य में जुटे रहे। वही स्थिति श्री विनय आर्य व कुछ और कार्यकर्ताओं की भी हो गई थी। किन्तु उस ओर ध्यान न देकर एक ही धुन थी सम्मेलन-सम्मेलन। ऐसी लगन आर्यों में जागृत हो तो समाज का पूरा चित्र ही बदल सकते हैं।

विशेष-ये पंक्तियां सम्मेलन के लिए जवाबदार सदस्यों, पदाधिकारियों की ओर से मैं निवेदन कर रहा हूं।

सम्मेलन का उद्देश्य आर्यों की बहुत बड़ी भीड़ एकत्रित कर वाहवाही लूटना कदापि नहीं था। उद्देश्य था निराशाभाव से घिरे कुछ आर्यजनों को संगठन शक्ति का परिचय देना, और सम्मेलन में आकर यहां से एक संकल्प लेकर नव जागरण करना था। इस सम्मेलन में ऐसा बहुत कुछ हुआ। सम्मेलन में आने वालों को अपनी विशाल शक्ति देख उत्साह भी हुआ और प्रेरणा भी।

अच्छी से अच्छी व्यवस्था हो सके, अच्छे वक्ताओं से प्रेरणास्पद चर्चा के द्वारा एक सन्देश आर्यजनों तक पहुंचे। भोजन, निवास, आतिथ्य, अन्य आवश्यक आवश्यकताएं उत्तम हो, इसका पूरा-पूरा ध्यान दिया गया। 2006 व 2012 में रही कुछ कमियों को ध्यान में रखते, उनकी पुनरावृत्ति न हो प्रयास रहा। जिसमें पहले की अपेक्षा अधिक सफलता मिली किन्तु पूर्ण सफलता मिली यह नहीं कहा जा सकता।

पूर्णता तो परमेश्वर के ही कार्यों में है, हम सब कार्यकर्त्ता मानव हैं, इसलिए कुछ त्रुटियां, व्यवस्था, व्यवहार या कार्यक्रम की उपयोगिता की दृष्टि से होना स्वाभाविक है। इसके लिए हम सबको किसी आगन्तुक अतिथि, विद्वान या कार्यकर्ता को हुए शारीरिक और आत्मिक क्लेश, कष्ट के लिए हमें खेद है। ये त्रुटियाँ यदि रही भी तो किसी आलस्य, प्रमाद दुर्भावना के कारण नहीं, तात्कालीन परिस्थितियों के कारण, विशाल कार्यक्रम की व्यवस्था के कारण या मानवीय भूल के कारण रही होंगी। कृपया इसे अन्यथा न लेवें। किन्तु इनसे हमें अवगत अवश्य करावें ताकि भविष्य में ये पुनः न हो सकें।

कार्यक्रम का 28 अक्तूबर को समापन आपकी, हमारी यात्रा का यहां समापन नहीं विराम हुआ है। अब 2024 महर्षि के 200वें जन्म दिवस की तैयारी में लगना है। आगामी कार्यक्रम इससे कई गुना बड़ा होगा, सारा विश्व स्वामी दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व को जान जावेगा, उसकी तैयारी में हम सबको लगना है।

इस कार्यक्रम की सफलता का श्रेय कर्मठ, समर्पित कार्यकर्ताओं, पदाधिकारियों, विद्वानों को तो है ही किन्तु प्रत्येक आर्य का भी है, जो दूर-दूर से चलकर कष्ट उठाकर यहां पहुंचे, अपनी उपस्थिति से इसकी गरिमा बढ़ाई। सभा की ओर से उन सबका आभार व्यक्त करता हूं।

शोक समाचार

आर्य समाज मानसा पंजाब के कर्मठ प्रधान एवं आर्य सीनियर सैकेण्ड्री स्कूल के प्रधान श्री प्रमोद प्रकाश आर्य के पूज्य पिता श्री निरंजन लाल जी का देहान्त दिनांक 1 नवम्बर 2018 को हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। श्री निरंजन लाल जी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता थे। आर्य समाज मानसा के प्रत्येक कार्यों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते थे। ऐसे कर्मठ व्यक्ति का इस संसार से जाना परिवार के साथ-साथ आर्य समाज की भी क्षति है। उनकी आत्मिक शान्ति के लिए अन्तिम श्रद्धांजलि समारोह का आयोजन 13 नवम्बर को दोपहर 12:00 से 1:00 बजे तक गौशाला भवन बी. ब्लॉक मानसा में किया गया।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब श्री निरञ्जन लाल जी के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त करती है। परमपिता परमात्मा दिवंगत आत्मा को शान्ति व सद्गति प्रदान करे तथा अपने चरणों में स्थान दें। दुःख की इस घड़ी में हम सभी शोक संतप्त परिवार के साथ हैं।

-प्रेम भारद्वाज सभा महामन्त्री एवं संपादक आर्य मर्यादा

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों 25 अक्तूबर से 28 अक्तूबर तक नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में पंजाब की कई आर्य समाजों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। इस अवसर पर आर्य समाज भार्गव नगर के नेतृत्व में जालन्धर की समस्त आर्य समाजों से पदाधिकारी एवं आर्य बहिनें अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी के साथ चित्र खिंचवाते हुये। इनके साथ खड़े हैं आर्य समाज के उप प्रधान एवं सभा मंत्री श्री सुदेश कुमार, बस्ती बाबा खेल से ओम प्रकाश एवं निर्मल कुमार, सुरेन्द्र कुमार, आर्य नगर के मंत्री श्री वेद आर्य जी, श्री बिशम्भर कुमार, आर्य समाज बस्ती दानिशमंदा के प्रधान श्री यशपाल आर्य, आर्य समाज संत नगर के प्रधान श्री जयचंद जी, आर्य समाज दयानन्द चौक जालन्धर से हिन्दपाल, श्री मनोहर लाल जी आर्य, श्री राज कुमार जी प्रधान एवं आर्य समाज की माताएं एवं बहिनें।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों 25 अक्तूबर से 28 अक्तूबर तक नई दिल्ली में अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन का आयोजन किया गया। इस अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में पंजाब की कई आर्य समाजों ने बढ़ चढ़ कर भाग लिया। आर्य समाज बरनाला से आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मंत्री श्री भारत भूषण मेनन जी के नेतृत्व में कई लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री श्री प्रेम भारद्वाज जी के साथ अंतर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन में आर्य समाज बरनाला के सदस्य फोटो खिंचवाते हुये।

आर्य समाज संत नगर का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज वेद मन्दिर संत नगर, बस्ती शेख जालन्धर का वार्षिक उत्सव 23 नवम्बर से 25 नवम्बर 2018 तक मनाया जा रहा है। मुख्य उत्सव 25 नवम्बर 2018 रविवार को होगा। इस अवसर पर पं. विजय कुमार शास्त्री महोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के द्वारा वेद कथा की जाएगी। आप सभी परिवार सहित पधार कर कृतार्थ करें।

जय चन्द भगत प्रधान आर्य समाज संत नगर

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक उत्सव 23 से 25 नवम्बर 2018 तक बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। जिसमें मंगल यज्ञ होगा जिसके ब्रह्मा पं. बाल कृष्ण जी शास्त्री होंगे। आर्य जगत के प्रसिद्ध वैदिक विद्वान स्वामी सम्पूर्णानन्द जी करनाल के उत्तम प्रवचन एवं भजनोपदेशिका अंजलि आर्य जी घरौंडा तथा पं. राजेन्द्र शास्त्री जी के मनोहर भजन होंगे। 23 व 24 नवम्बर का कार्यक्रम प्रात: 8:00 से 9:40 तथा रात्रि 7:30 से 9:00 बजे तक होगा। समापन समारोह 25 नवम्बर 2018 रविवार प्रात: 8:30 से 12:30 बजे तक होगा। आप परिवार एवं इष्टमित्रों सहित पधार कर धर्मलाभ प्राप्त करें।

विजय सरीन प्रधान आर्य समाज जवाहर नगर

आर्य समाज बंगा का वार्षिक उत्सव

आपको यह जानकर अति प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज बंगा का 37 वां वार्षिक उत्सव एवं विश्व शान्ति यज्ञ का आयोजन दिनांक 22 से 25 नवम्बर 2018 तक किया गया है। इस उत्सव में आर्य जगत के उच्चकोटि के विद्वान् आचार्य रामानन्द जी शिमला, स्वामी डा. पूर्णानन्द जी सरस्वती मथुरा, श्री सुरेश शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, एवं संगीतज्ञ पं. सुखपाल आर्य सहारनपुर उत्तर प्रदेश पधार रहे हैं। कार्यक्रम प्रात: 7:00 से 8:30 बजे तक तथा रात्रि 7:00 से 9:00 बजे तक रहेगा। मुख्य समारोह 25 नवम्बर 2018 को प्रात: 8:30 से 1:30 बजे तर रहेगा। आप सभी सपरिवार इष्टमित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

शाम लाल आर्य मन्त्री आर्य समाज बंगा

पुरोहित की आवश्यकता

आर्य समाज अबोहर के लिए एक सुयोग्य पुरोहित की आवश्यकता है। दक्षिणा योग्यतानुसार दी जाएगी। वैदिक रीति से सभी संस्कार सम्पन्न करने की योग्यता आवश्यक है। आवास का प्रबन्ध आर्य समाज अबोहर की ओर से नि:शुल्क रहेगा। कृपया प्रधान आर्य समाज के मोबाइल नम्बर 98148-64211 पर सम्पर्क करें। **आर्य समाज अबोहर**

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**

आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।